

(4)
है। पुनः परिधिपत्र के अनुसार सभी संघर्ष गुरु इसे स्थिर कर ही लेते हैं, या नीतियाँ निर्धारित हो ही जाती हैं।

प्रश्न:—सिर्फ जाति के आधार पर भारत में चुनावी नतीजे तय नहीं हो सकते? उनके दो कारण बताएँ।

उत्तर- ऐसा कहा जाता है, कि सामुदायिक समाज की संरचना का आधार जाति है, क्योंकि एक जाति के लोग ही स्वभावित समुदाय का निर्माण करते हैं। दूसरे अन्य समुदाय के हितों से इनका हित भिन्न होता है। परन्तु ऐसी बात नहीं है। सिर्फ जाति के आधार पर भारत में चुनावी नतीजे तय नहीं होते। इसके दो कारण निम्नलिखित हैं।

i.) किसी भी निर्वाचन क्षेत्र का गठन इस प्रकार नहीं किया गया है कि उसमें मात्र एक मतदाता रहे। ऐसा हो सकता है कि एक जाति के मतदाता की संख्या ज्यादा हो सकती है, परन्तु दूसरी जाति के मतदाता भी निर्णायक भूमिका निभाते हैं। अतएव ~~हम चाहते~~ एक दल एक से अधिक जाति के लोगों का भरोसा हासिल करना चाहता है।

ii.) अगर जातिय भावना स्थायी और अटूट होता है तो जाति जातीय गोलबन्द पर सत्ता में आने वाली पार्टी कभी हारती ही नहीं।